पाठ – 11

शहीद की माँ

– श्री योगेश चंद्र शर्मा

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम दो रूपों में लड़ा जा रहा था। एक वर्ग में वे लोग थे जो अहिंसक लड़ाई लड़ रहे थे। दूसरे वर्ग में वे क्रांतिकारी थे जो हिंसा तक का सहारा लेकर अँग्रेजों को भारत से खदेड़ना चाहते थे। रामप्रसाद 'बिस्मिल' दूसरे वर्ग में थे। क्रांतिकारियों को अँग्रेजों से लड़ने के लिए हथियारों की आवश्यकता थी। हथियार खरीदने के लिए उन्हें धन चाहिए था। वे भारतीयों से धन छीनने की अपेक्षा ब्रिटिश सरकार का खजाना लूटना श्रेयस्कर समझते थे। क्रांतिकारियों के जासूसों ने उन्हें सूचना दी कि अमुक तारीख को अमुक ट्रेन से सरकारी खजाना दिल्ली जाएगा। क्रांतिकारियों ने उस खजाने को लूटने की योजना बना ली। क्रांतिकारियों के दल ने काकोरी नामक स्थान पर ट्रेन को रोका और खजाना लूट लिया। रामप्रसाद 'बिस्मिल' क्रांतिकारियों के दल के नेता थे। अँग्रेजों ने अपना जाल फैलाकर उन्हें तथा उनके कुछ अन्य साथियों को पकड़ लिया। 'बिस्मिल' को फाँसी की सज़ा सुनाई गई। फाँसी के एक दिन पहले उनकी माँ उनसे मिलने जेल में पहुँचीं। 'बिस्मिल' अपनी माँ से मिलना नहीं चाहते थे। उन्हें भय था कि कहीं उनसे मिलकर माँ का हृदय द्रवित न हो जाए। किंतु क्रांतिवीर 'बिस्मिल' की माँ का हृदय तो चट्टान की भाँति कठोर था। उन्हें गर्व था कि उनका बेटा भारत माँ को स्वतंत्र कराने के प्रयास में फाँसी पर झूलने जा रहा है। देशभक्ति से सराबोर उस त्यागमयी माँ ने अपने सपूत को आशीर्वाद दिया और उससे हँसते-हँसते विदा ली। धन्य है वह माँ जिसने अपने लाल को भारत माता की बलिवेदी पर बलिदान कर दिया। असीम देशभक्ति, साहस, वीरता की भावना से ओतप्रोत माँ और पुत्र का वार्तालाप इस एकांकी में पढ़िए।

(जेल की कोठरी का दृश्य। रामप्रसाद 'बिस्मिल' सींखचों के पीछे, इधर-उधर घूमते हुए मस्ती से गा रहे हैं।)

''सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है ,
देखना है ज़ोर कितना बाजू-ए-क़ातिल में है ।
सिर्फ मिट जाने की हसरत, इक दिले 'बिस्मिल' में है ,
अब तेरी हिम्मत की चर्चा, गैर की महफिल में है।

(गीत की समाप्ति के साथ ही जेलर प्रवेश करता है। जेलर भारतीय है। रामप्रसाद 'बिस्मिल' के प्रति उसकी आँखों में अपनापन है।)

जेलर – (प्रवेश करते हुए) पंडित रामप्रसाद 'बिस्मिल' !

बिस्मिल – (मुस्कुराते हुए जेलर की तरफ देखकर) जेलर साहब ! फरमाइए क्या बात है ?

जेलर – तुमसे कोई मिलने आया है ।

बिस्मिल – मुझसे मिलने ? कौन आया है ?

जेलर – तुम्हारी माँ हैं ।

बिस्मिल – (प्रसन्नता से) मेरी माँ ! (कुछ सोचकर अचानक उदास हो जाता है।) लेकिन ....! नहीं, नहीं, जेलर साहब ! मैं अपनी माँ से नहीं मिलूँगा ।

जेलर – (आश्चर्य से) माँ से नहीं मिलोगे ? यह तुम क्या कह रहे हो ?

बिस्मिल – हाँ जेलर साहब, मैं अपनी माँ से नहीं मिल पाऊँगा। मुझे उनसे नहीं मिलना चाहिए।

जेलर – लेकिन क्यों ? कल तुम्हें फाँसी होने वाली है और तुम आखिरी बार अपनी माँ से विदा भी नहीं लोगे ?

बिस्मिल – मज़बूर हूँ जेलर साहब ! केवल एक दिन की मेरी इस ज़िंदगी को देखकर माँ को कितना दुख होगा, इसे आप नहीं जान सकते और मुझे डर है कि माँ की भीगी आँखें कहीं मेरे कदमों को डगमगा न दें , मुझे मेरी मौत के लिए अफसोस न होने लगे ।

जेलर – (व्यंग्य से) इसका मतलब हुआ कि तुम्हें अपने आप पर यकीन नहीं ।

बिस्मिल – नहीं, नहीं, जेलर साहब ! ऐसा न कहिए । मैं चट्टान की तरह अटल हूँ और ईश्वर को अर्पित किए गए किसी फूल की मुस्कान मेरी रग–रग में है । लेकिन तब भी जेलर साहब ! माँ से मिलने की हिम्मत मैं नहीं जुटा पा रहा हूँ । क्षमा चाहता हूँ जेलर साहब! माँ से भी मेरी ओर से क्षमा माँग लेना, मैं उनसे नहीं मिल सकूँगा ।

(यकायक रामप्रसाद 'बिस्मिल' की वृद्धा माँ प्रवेश करती हैं । साधारण वेशभूषा ।)

माँ – (प्रवेश करते हुए) क्या कह रहा है, रामप्रसाद ? माँ से नहीं मिलेगा ? मुझसे नहीं मिलेगा तू ? ज़रा फिर से एक बार मेरी ओर देखकर कहना तो सही ।

बिस्मिल – (आश्चर्य से) माँ ? तुम ..... ?

माँ – हाँ मैं ही तो हूँ । क्या अपनी माँ को पहचान भी नहीं सकता ?

बिस्मिल – ऐसे मत बोलो, माँ !

माँ – और क्या बोलूँ, अपने देश का ऐसा दीवाना बना कि जन्म देने वाली अपनी माँ को भी भूल गया ? मुझसे मिलने को भी तेरा जी न चाहा ?

बिस्मिल – माँ ! मुझे गलत मत समझो । मेरा मतलब यह नहीं था । मैंने तो ..... ।

माँ – (बात काटकर स्नेह से) अरे, अब रहने दे अपनी सफाई को । मैं सब जानती हूँ । तू अपनी माँ को भले ही भूल जा, पर मैं अपने बेटे रामप्रसाद को खूब जानती हूँ । तूने सोचा होगा कि तुझे इस हाल में देखकर मुझे शायद दुख होगा । मौत की गोद में तुझे देखकर मेरी आँखों से परनाले बहने लगेंगे ।

बिस्मिल – हाँ माँ ! मेरा मतलब यही था।

माँ – पगले ! तू अपनी माँ को इतना भी नहीं पहचान सका ? जिस भारत माँ के लिए तू कुर्बान हो रहा है, वह अकेले तेरी ही तो माँ नहीं, वह तो मेरी भी माँ है । बेटे ! तेरे सभी बुजुर्गों की माँ है । इस सारे देश की माँ है ।

बिस्मिल – (भावावेश में) माँ ! मैंने समझा था कि .... ।

माँ – अन्य साधारण स्त्रियों की तरह मैं भी रोने–चीखने लगूँगी । यही न ? लेकिन बेटे, तूने यह न सोचा कि जिस माँ ने तुझे बचपन से ही त्याग, वीरता और देश–प्रेम का पाठ पढ़ाया है, आज अपनी मेहनत को फलते–फूलते देखकर उसे कष्ट क्यों होगा? आज का दिन तो मेरे लिए सबसे बड़ी खुशी का दिन है ।

बिस्मिल – मुझे अपने विचारों के लिए अफसोस है माँ !

माँ – नहीं मेरे लाल ! आज के दिन तू किसी का अफसोस न कर । तू तो कुर्बानी की राह जा रहा है, मेरे बच्चे ! अफसोस तो मुझे है कि मेरा दूसरा बेटा अभी इतना छोटा क्यों है ?

बिस्मिल – माँ ! विश्वास रखो । तुम्हारे इस बेटे के बलिदान से अनेक रामप्रसाद पैदा होंगे और तब वह दिन दूर नहीं होगा, जब हमारा यह देश गुलामी के चंगुल से मुक्त होकर आज़ादी की साँस ले सकेगा और लहलहाती ज़मीन हमारी अपनी होगी ।

माँ – कितना शुभ होगा वह दिन ?

बिस्मिल – हाँ माँ । (कुछ ठहरकर) माँ ! एक इच्छा है ।

माँ – बोल बेटे ! क्या इच्छा है ? मैं तेरी हर इच्छा को पूरा करने की कोशिश करूँगी ।

बिस्मिल – जब आज़ादी का पहला जश्न मनाया जाए, तब मेरी तस्वीर को ऐसी जगह रख देना, जहाँ से मैं सारा जश्न अपनी उस तस्वीर के ज़रिए देख सकूँ, लेकिन मेरी उस तस्वीर को कोई न देख सके ।

माँ – ऐसा क्यों मेरे लाल ? मैं तेरी तस्वीर को ऐसी जगह रखूँगी, जहाँ सारी दुनिया उसे देख सके ।

बिस्मिल – नहीं माँ ! ऐसा मत करना । मेरी तस्वीर को देखकर लोगों को मेरी याद आ जाएगी और तब शायद उस खुशी के मौके पर उनकी आँखें गीली हो जाएँ । मेरे देश को आज़ादी मिले और मेरे देशवासी उस दिन आँसू बहाएँ, यह सहन नहीं हो सकेगा, माँ !

माँ – (भावावेश में) मेरे बेटे ! ऐसा ही होगा, मेरे लाल !

जेलर – (घड़ी देखते हुए) क्षमा कीजिए । समय काफी हो चुका ।

माँ – चलती हूँ जेलर साहब ! (अपनी साड़ी के पल्लू में बँधे हुए कुछ बेसन के लड्डू निकालती हैं ।) ले बेटा ! ये बेसन के लड्डू तेरे लिए बनाकर लाई हूँ । माँ के हाथ का यही तुझे अंतिम भोग है ।

बिस्मिल – बेसन के लड्डू ?

माँ – हाँ ! तुझे बेसन के लड्डू बहुत अच्छे लगते हैं ना ?

बिस्मिल – (हिचकिचाते हुए) लेकिन माँ ..... जेलर साहब ! (बिस्मिल जेलर की तरफ देखता है। जेलर मुस्कुराकर स्वीकृति देता है ।)

माँ – (मुस्कुराकर) चिंता न कर । जेलर साहब से मैंने पहले ही पूछ लिया है । बहुत अच्छे आदमी हैं ।

बिस्मिल – लाओ माँ ! अपने हाथ से ही खिला दो । (प्रसन्नचित्त माँ बिस्मिल को लड्डू खिलाती हैं ।)

बिस्मिल – बस माँ ! ये बचे हुए लड्डू मैं बाद में खा लूँगा । (लड्डू लेकर अपने पास रख लेता है।)

माँ – (बिस्मिल के सिर पर हाथ फेरते हुए) अच्छा मेरे लाल ! मैं चलती हूँ ।

बिस्मिल – अच्छा माँ ! ईश्वर करे अगले जन्म में भी तुम ही मेरी माँ बनो ।

माँ – और मैं फिर तुझे इसी तरह कुर्बान कर दूँ । पाल–पोसकर बड़ा करूँ और फिर ..... (गला रुँध जाता है ।)

बिस्मिल – (आश्चर्य से) माँ यह क्या ? यह तुम्हें अचानक क्या हो गया ?

माँ – (जबर्दस्ती हँसते हुए) कुछ नहीं बेटा ! कुछ भी तो नहीं ।

बिस्मिल – तो फिर तुम्हारी आँखों में आँसू क्यों छलक आए माँ ?

माँ – उन्हें छलकने दे बेटा ! उनकी तू क्यों चिंता करता है ?

बिस्मिल – नहीं माँ ! विदा की बेला में तुम्हारी आँखों में चमकने वाले ये आँसू .... मेरे कदमों को डगमगा रहे हैं ।

माँ – (आश्चर्य और दुख से) रामप्रसाद ! यह क्या कहता है ? जन्मभूमि पर न्यौछावर होनेवाले बहादुर इस तरह की बातें नहीं किया करते । संसार की कोई भी शक्ति उनके कदमों को नहीं डगमगा सकती ।

बिस्मिल – मैं भी अब तक अडिग ही हूँ माँ ! लेकिन तुम्हारी आँखों से बहनेवाले दर्द को मैं सहन नहीं कर सकता । तुम दुखी रहोगी माँ तो मेरी आत्मा भी दुखी रहेगी ।

माँ – मेरा दुख ? तेरी कुर्बानी पर मुझे दुख ? यह तू क्या कह रहा है बेटा ?

बिस्मिल – मैं नहीं कह रहा माँ ! तुम्हारी आँखों से बहने वाले आँसू कह रहे हैं कि तुम्हें कोई दुख है ।

माँ – (हँसकर) पगले ! अरे ये आँसू तो खुशी के हैं ।

बिस्मिल – खुशी के आँसू !

माँ – हाँ बेटा ! पाल–पोसकर अपनी संतान को अपने हाथों से देश के लिए कुर्बान कर देने में भी एक अज़ीब–सी खुशी है और उस खुशी को प्राप्त करने का गौरव मुझे प्राप्त हो रहा है ।

बिस्मिल – माँ ! .... मैंने समझा था कि ..... ।

माँ – अरे ! अब रहने भी दे अपनी समझ को । जेलर साहब ! क्या कल अपने बेटे की फाँसी के समय में यहाँ रह सकती हूँ ।

जेलर – जी नहीं । हुक्म न होने के कारण मैं मज़बूर हूँ ।

बिस्मिल – ज़रूरत भी क्या है माँ ? तुमने अपने बेटे को भारत माँ की गोद में डाल दिया । अब उसकी सेवा के लिए, यह आत्मा किसी भी रूप में रहे । क्या फर्क पड़ता है ?

माँ – तू ठीक कहता है मेरे लाल ! अच्छा मेरे बच्चे ! अपनी भारत माँ की अच्छी तरह सेवा करना । कोई चूक न होने पाए । (बिस्मिल के सिर पर हाथ फेरती हैं । बिस्मिल माँ के पैर छूता है ।) चलिए जेलर साहब ! (जेलर के साथ प्रस्थान करती है । बिस्मिल उस तरफ देखता रहता है । पर्दा धीरे–धीरे गिरता है ।)

शब्दार्थ :– **सरफरोशी** – बालिदान देना, सिर कलम कर देना, **तमन्ना** – तीव्र इच्छा, **हसरत**–इच्छा, **महफिल**–सभा, **मजबूर**–बेबस, लाचार, **अफसोस**–दुःख, **यकीन**–विश्वास, **परनाले**–आँसू, **गुलामी**–दासता, **जश्न**–समारोह, **चंगुल**–बंधन ।

अभ्यास

पाठ से

1. रामप्रसाद 'बिस्मिल' कौन थे? उन्हें फाँसी की सजा क्यों हुई?
2. जेल में आईं अपनी माँ से मिलने के लिए 'बिस्मिल' हिचकिचा क्यों रहे थे?
3. 'बिस्मिल' की माँ ने अपने बेटे को किस बात की उलाहना दी?
4. 'बिस्मिल' ने माँ के सामने कौन–सी इच्छा प्रकट की?
5. ''मुझे मेरी मौत के लिए अफसोस न होने लगे'' बिस्मिल ने ऐसा क्यों कहा ?
6. बिस्मिल ने अपनी माँ से तस्वीर को कैसी जगह रखने के लिए कहा?
7. 'बिस्मिल' ने अपनी तस्वीर को सभी के सामने रखने के लिए मना क्यों किया?
8. अपनी आँखों में आँसू आने का माँ ने क्या कारण बताया?
9. कारागार से विदा होते समय माँ ने बिस्मिल से क्या कहा ?
10. माँ को किस घात से गौरव का अनुभव हो रहा था?
11. इस एकांकी के आधार पर बिस्मिल की माँ की चरित्रगत विशेषताओं को लिखिए?

पाठ से आगे

1. ''अपने देश का ऐसा दीवाना बना कि जन्म देने वाली अपनी माँ को भी भूल गया!'' माँ के ऐसा कहने में कौन से भाव रहे होंगे? विचार कर लिखिए।
2. ''मैं चट्टान की तरह अटल हूँ और ईश्वर को अर्पित किए गए किसी फूल की मुस्कान मेरे रग–रग में है मगर वह हिम्मत नहीं है।''जेलर साहब से बिस्मिल ने ऐसा क्यों कहा होगा ?
3. जिस माँ ने तुझे ''बचपन से ही त्याग, वीरता और देश–प्रेम का पाठ पढ़ाया है, आज अपनी मेहनत को फलते–फूलते देखकर उसे कष्ट क्यों होगा? बिस्मिल की माँ का यह कहना किस भाव का सूचक है ?

3BH12R

4. एकांकी में बिस्मिल के लिए जेल में उनकी माँ बेसन के लड्डू बनाकर खाने के लिए लाती है। इसी तरह आपको भी माँ के हाथ से बना कोई भोज्य पदार्थ विशेष रुप से पंसद होगा। उसके बारे में लिखिए।

भाषा से

1. ''तुम्हारे इस बेटे के बलिदान से अनेक रामप्रसाद पैदा होंगे'' पाठ में उद्धृत इस वाक्य में शब्द 'रामप्रसाद' सामान्यत व्यक्ति वाचक संज्ञा है। जिसका संबंध रामप्रसाद नामक व्यक्ति से हैं, परंतु यहाँ इस वाक्य में स्वयं शहीद 'रामप्रसाद' ने देशहित में शहीद होने वाले वीरों के लिए 'अनेक रामप्रसाद' के पैदा होने की बात कही हैं। भाषा में इस प्रकार की स्थिति आने पर व्यक्ति वाचक संज्ञा, जाति वाचक संज्ञा का कार्य करने लगती है। कुछ अन्य उदाहरण नीचे दिए गए हैं इन्हें भी देखिए –

   क. वह कलयुग का राम है।

   ख. तुम ही विभीषण हो।

   ग. वह आदमी नहीं जल्लाद है।

   आप भी इस तरह के पाँच वाक्यों को लिखिए।

3BQW4E

2. मेरी माँ! (कुछ सोचकर) लेकिन .....! नहीं नहीं जेलर साहब! मैं अपनी माँ से नहीं मिलूँगा। आश्चर्य, आनंद, दुःख आदि का भाव प्रकट करने के लिए जिस चिह्न का प्रयोग किया जाता है उसे विस्मयादि बोधक चिह्न(!) कहते हैं पाठ में इस प्रकार के वाक्यों का अनेक स्थानों पर प्रयोग हुआ है। उन्हें खोजकर लिखिए।

3. निम्नलिखित अनुच्छेद में रिक्त स्थानों को कोष्ठक में दिए गए उचित शब्द से भरकर पूरा कीजिए–
अन्य साधारण स्त्रियों की .....(तरह/जगह) मै भी रोने–चीखने लगूँगी। यह न ? लेकिन .....(बेटे/बेटी) तूने यह न सोचा कि जिस माँ ने तुझे.....(जवानी/बचपन) से ही त्याग, वीरता और देश–प्रेम का पाठ पढ़ाया है, आज अपनी.....(हिम्मत/मेहनत) को फलते–फूलते देखकर उसे.....(कष्ट/खुशी) क्यों होगा ? ''आज का दिन तो मेरे लिए सबसे..... .....(बड़ी/छोटी) खुशी का दिन है।

4. पाठ में हम देखते हैं कि बिस्मिल और जेलर के बीच हुई बातचीत में काफी सवाल हैं, जिन्हें हम प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं जैसे –

- मुझसे मिलने कौन आया है ?
- माँ से नहीं मिलोगे ?
- यह तुम क्या कह रहे हो ?

उपर्युक्त वाक्यों को पढ़ने से स्पष्ट होता है कि प्रश्न वाचक वाक्य हम कैसे बनाते हैं अर्थात् जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा गया हो अथवा प्रश्न पूछने का भाव हो उसके अंत में प्रश्न वाचक चिह्न (?) का प्रयोग कर प्रश्नवाचक वाक्य बनाते हैं।

पाठ में प्रयुक्त प्रश्न वाचक वाक्यों को खोज कर लिखिए तथा कुछ साधारण वाक्यों का चुनाव कर प्रश्नवाचक वाक्यों का निर्माण कीजिए।

5. **निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए –**

क	**ख**	**क**	**ख**
नीति	**अनीति**	**रुचि**	**अरुचि**
सत्य	**असत्य**	**मान्य**	**अमान्य**
धर्म	**अधर्म**	**विश्वास**	**अविश्वास**

क खण्ड के नीचे लिखे शब्दों में और ख खण्ड के नीचे लिखे शब्दों में आपको क्या अन्तर दिखाई दे रहा है ? क्या ख खण्ड के शब्द क खण्ड के शब्दों के विलोम शब्द हैं। यदि हाँ तो इन उदाहरणों से क्या नियम निर्धारित होता है ? इसी नियम के पालन में कोई पाँच अन्य शब्द और उनके विलोम शब्द लिखिए।

6. **निम्नांकित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**
जी चाहना, कदम डगमगाना, गोद में डालना, फलना–फूलना, चंगुल से मुक्त होना।

7. **समानार्थी शब्दों को मिलाइए जैसे उद्यान – बगीचा–**

सरफरोशी	त्याग
तमन्ना	हत्यारा

कातिल	अंतर
कुर्बानी	सभा
हुक्म	बलिदान
महफिल	इच्छा
फर्क	आदेश

8. **नीचे लिखे शब्दों को बारहखड़ी के क्रम में लिखिए –**

मिठाई, मूली, मतलब, मंगल, मौसी, मीनार, मालिक, मुकुट, मेला, मोरनी, मैदान।

नोट :– शब्द कोश में इन्हीं बारहखड़ी के क्रम से शब्दों की व्यवस्था होती है। उनके क्रम के आधार पर शब्दार्थ ढूँढा जाता है।

9. **निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए तथा नीचे कोष्ठक में दिए गए उपयुक्त शब्दों का प्रयोग कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –**

प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने माँ.... ममता, देशप्रेम की उत्कट अभिलाषा और .... के प्रति बलिदान की भावना का .... चित्र प्रस्तुत किया है। ऐसा उत्कृष्ट.... करनेवाली माँ केवल अपने बेटे.... ही माँ नहीं होती बल्कि वे.... के नाम से इतिहास में जानी जाती हैं। बिस्मिल जैसे रणबाँकुरे, वीर, देशभक्त .... साहसी बेटों को पाकर राष्ट्र गौरव...... अनुभव करता है और वह राष्ट्र.... होकर दिन–दूनी रात चौगुनी उन्नति के शिखर पर बढ़ता जाता है।

(राष्ट्रमाता, का, और, की, राष्ट्र, स्वतंत्र, अनूठा, बलिदान, की)

10. **इन वाक्यों को पढ़िए –**

क. **मैंने अपने हाथों से कमरे की सफाई की है।**

ख. तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है?

दोनों वाक्यों में ‘ सफाई ’ शब्द का प्रयोग हुआ है। इन दोनों के अर्थ अलग–अलग हैं। दोनों अर्थों में इनका अलग–अलग प्रयोग कीजिए।

11. **इस एकांकी का सारांश लिखिए।**

योग्यता विस्तार

1. स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारियों का चित्र संग्रह कर उनकी सूची बनाइए और कक्षा में चस्पा कीजिए।
2. प्रस्तुत एकांकी को साथियों के साथ मिलकर अभिनय के साथ विद्यालय में प्रस्तुत कीजिए। आप इस कार्य में अपने शिक्षक की सहायता भी ले सकते हैं।
3. स्वाधीनता–आन्दोलन में जिन क्रांतिकारियों ने भाग लिया, उनकी सूची बनाइए।
4. ‘सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में।’ इस गीत के निहित भाव को शिक्षक की मदद से समझिए और ऐसे ही भाव वाले अन्य गीतों को ढूँढकर लिखिए।

3HV9IB